



मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 18-11-2025

इटावा(उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2025-11-18 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2025-11-19	2025-11-20	2025-11-21	2025-11-22	2025-11-23
वर्षा (मिमी)	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	29.0	29.0	29.0	30.0	29.0
न्यूनतम तापमान(से.)	12.0	13.0	13.0	14.0	14.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	65	66	71	73	71
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	34	36	39	41	42
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	4	4	2	0	2
पवन दिशा (डिग्री)	326	307	281	360	281
क्लाउड कवर (ओक्टा)	0	0	0	0	0
चेतावनी	कोई चेतावनी नहीं				

पूर्वानुमान सारांश:

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, आगामी पाँच दिनों में आसमान साफ रहने के कारण वर्षा की कोई संभावना नहीं है। हालाँकि, वायुमंडल की ऊपरी सतह पर हल्की धूंध छाई रहने तथा सुबह व रात में हल्की शीतलहर चलने की संभावना है। अधिकतम तापमान 28.0-29.0°C के मध्य रहने की संभावना है, जो सामान्य के आसपास रहने की संभावना है तथा न्यूनतम तापमान 13.0-14.0°C के मध्य रहने की संभावना है, जो सामान्य से 1-2°C अधिक रहने की संभावना है। सापेक्षिक आर्द्रता का अधिकतम व न्यूनतम दायरा 65-73% तथा 34-42% के मध्य रहने की संभावना है। हवा की दिशा उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व तथा गति 1.0-4.0 किमी/घंटा के मध्य रहने की संभावना है, तथा हवा की गति सामान्य से 1-2 किमी/घंटा अधिक रहने की संभावना है।

मौसम चेतावनियाँ (अगले दिन के 08:30 IST तक मान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार सुबह और रात के समय हल्की ठंड की चेतावनी है।

मौसम चेतावनियों के कृषि पर संभावित प्रभाव और संबंधित एग्रोमेट सलाह:

किसानों को सूचित किया जाता है कि रबी की फसलों एवं सज्जियों की बुवाई के लिए मौसम अनुकूल है रबी के मौसम में बोई जाने वाली फसले जैसे - चना, मटर, मसूर, सरसों व अलसी आदि की बुवाई शीघ्र पूरा करने का प्रयास करें।

सामान्य सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे रबी की फसलें जैसे-चना, मटर, मसूर, सरसों, अलसी, आलू एवं सब्जियों की बुवाई के लिए मौसम अनुकूल हैं। कीटनाशकों, रोगनाशी और खरपतवारनाशी रसायनों के लिए, केवल साफ पानी से उपकरणों को धोने के लिए उपयोग करें और हवा की विपरीत दिशा में खड़े होकर कीटनाशी, रोगनाशी और खरपतवारनाशी स्प्रे न करें। यदि संभव हो तो, छिड़काव करने के बाद, खाने से पहले और कपड़े धोने के बाद हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धोना चाहिए।

लघु संदेश सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे आलू की फसल को झुलसा रोग/शीत लहर से बचाव हेतु आवश्यकतानुसार हल्की सिचाई करें तथा रबी फसलों की बुवाई के लिए मौसम अनुकूल हैं।

फसल विशिष्ट सलाह:

फसल	फसल विशिष्ट सलाह
चावल	धान की फसलों की मडाई के बाद धूप में 3-4 दिन तक सूखाकर बीज को भण्डारित करें।
गेहूँ	मौसम के दृष्टिगत सिंचित दशा में गेहूँ की बुवाई के लिए तापक्रम अनुकूल है, अतः गेहूँ की बुवाई के लिए खेत की तैयारी करें तथा क्षेत्रीय प्रजाति पी.बी.डब्ल्यू.-723, एच.पी.बी.डब्ल्यू.-01, डी.बी.डब्ल्यू.-39, के.-9107, के.-1006, के.-402, के.-607, डी.बी.डब्ल्यू.-90, डब्ल्यू.बी.-02, एन.डब्ल्यू.-5054, एच.डी.-3043, यू.पी.-2382, एच.यू. डब्ल्यू.-468, पी.बी.डब्ल्यू.-443, एच.डी.-2967 आदि, ऊसर भूमि के लिए संस्तुति प्रजाति :- के.आर.एल.-210, के.आर.एल.-213, के.-1317 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए खाद एवं बीज की व्यवस्था कर बुवाई का कार्य उचित नमी पर करें।
रेपसी ड	तोरिया की फसल में फलियां 75% सुनहरी दिखने पर फसल की कटाई करें। विलम्ब से बोई गई तोरिया की फसल फूल से फली बनने की अवस्था पर चल रही है जो नमी की कमी के प्रति संवेदन शील है, अतः हल्की सिचाई कर उचित नमी बनायें रखें।
सरसों	सरसों की फसल की बुवाई के 15-20 के अन्दर निराई - गुड़ाई करने के साथ ही पौध से पौध की आपसी दूरी 10 - 15 सेंटीमीटर कर लें। सरसों की फसल में पहली सिचाई बुवाई के 30 - 35 दिन के बाद करें तथा ओट आने पर 132 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से यूरिया की टॉपड्रेसिंग करें। सरसों की फसल में आरा मक्खी और बालदार सुण्डी कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु इमामेक्टिन बैंजोएट 5 % एस जी 200 ग्राम/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
फील्ड पी	मटर की फसल में निराई - गुड़ाई का कार्य बुवाई से 20-25 दिन के बाद करें।
चना	चने की फसल में कटुआ (कटवर्म) कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु क्लोरपाइरीफोस 50% ईसी + साइपरमेथिन 5% ईसी 2.0 लीटर/ हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। चना की फसल में निराई - गुड़ाई का कार्य बुवाई से 30-35 दिन के बाद करें। चना के फसल की संस्तुति प्रजातियाँ-अवरोधी, पूसा-256, पूसा-362, के.डब्ल्यू.आर.-108, के.-850, डी.सी.पी.-92-3, के.डी.जी.-1168 आदि देर से बोई जाने वाली संस्तुति प्रजातियाँ-पूसा-372, उदय, पन्त जी.-186 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए छोटे दानों का बीज 75-80 किलोग्राम व बड़े दाने की प्रजाति के लिए 90-100 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से बुवाई करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
आलू	वातावरण में नमी बढ़ने/बादल छाये रहने और तापक्रम गिरने से आलू की फसल में झुलसा रोग का प्रकोप तेजी से फैलता है, अतः इसके रोकथाम हेतु बुवाई के 25-30 दिन बाद मैंकोजेब 2.0 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आलू की फसल में पहली सिचाई बुवाई के 8-10 दिन के बाद करें। आलू फसल में खरपतवार के नियंत्रण के लिए बुवाई के 20-25 दिन के बाद निराई-गुड़ाई करने के पश्चात पुनः मिट्टी चढ़ा दे। आलू की फसल में कटुआ (कटवर्म) कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफोस 20 ईसी 2.5 लीटर/ हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
गोभी	समय से बोई गई सब्जियों की आवश्यकतानुसार निराई व सिचाई का कार्य करें। लहसुन, मूली, मेथी, धनिया, पालक एवं सोया आदि की बुवाई शीघ्र पूरा करें। पत्तागोभी एवं फूलगोभी की तैयार पौध की रोपाई करें। सब्जिओं की फसलों में फल छेदक / पत्ती छेदक कीट का प्रकोप दिखाई दे रहे हो तो इसके

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
	नियत्रण हेतु नीम आयल की १.५ मिली०/लीटर पानी में घोल बनाकर ३-४ छिड़काव ८-१० दिन के अंतराल पर करें।
पपीता	पपीते के पौध की रोपाई का कार्य करें। केले/पपीते के बागो की गुड़ाई-करके तने के चारों तरफ २५-३० सेंटीमीटर ऊंची मिट्टी चढ़ा दे स्टेंडिंग करें। आम में पत्ती कटाने वाले कीट की रोकथाम हेतु २% कार्बरिल १.५ % धूल का बुरकाव करें।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भेंस	मौसम में परिवर्तन की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने पशुओं को रात के समय खुले में न बांधें तथा रात में खिड़कियों व दरवाजों पर जूट के बोरों के पर्दे लगाएं तथा दिन में धूप में पर्दे हटा दें। पशुओं को खुरपका-मुंहपका रोग से बचाव के लिए टीका लगवाएं। गाभिन भैंसों/गाय को ढलान वाली जगह पर न बांधें। गाभिन भैंसों/गाय को पौष्टिक चारा व दाना खिलाएं तथा नवजात बच्चे को तीन दिन तक मिश्री अवश्य खिलाएं। पशुओं को हरे व सूखे चारे के साथ पर्याप्त मात्रा में दाना दें। पशुओं को दिन में ३-४ बार स्वच्छ व ताजा पानी अवश्य पिलाएं। लम्पी वायरस से बचाव के उपाय:- लम्पी रोग से प्रभावित पशुओं को अलग रखें। मक्खी, मछर, जूं आदि को मार दें। पशु की मृत्यु के बाद शव को खुला न छोड़ें। इस रोग से प्रभावित पशुओं में डॉक्टर के निर्देश पर बकरी चेचक का टीका लगाया जा सकता है। प्रभावित पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए मल्टी विटामिन जैसी दवाएं दी जा सकती हैं। इसके साथ ही संक्रमण से बचाव के लिए टीकाकरण अवश्य करवाएं।

मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
मुर्गी	किसानों को सलाह दी जाती है कि मुर्गियों के रहने के स्थान पर प्रति दिन सफाई करें। मुर्गियों को स्वच्छ पानी तथा सन्तुलित आहार की व्यवस्था करें। मुर्गियों / चूजों को ठण्ड से बचाने हेतु पर्याप्त गर्मी की व्यवस्था करें। मुर्गियों / चूजों को पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था करें। कृमिनाशक दवा पिलायें। रानीखेत बीमारी से बचाव के लिए टीकाकरण करायें।

मौसम चेतावनियों के संभावित प्रभाव (सामान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार सुबह और रात के समय हल्की ठंड की चेतावनी है।

प्रभाव आधारित सलाह (सामान्य):

किसानों को सूचित किया जाता है कि रबी की फसलों एवं सब्जियों की बुवाई के लिए मौसम अनुकूल है रबी के मौसम में बोई जाने वाली फसले जैसे - चना, मटर, मसूर, सरसों व अलसी आदि की बुवाई शीघ्र पूरा करने का प्रयास करें।

Farmers are advised to download Unified **Mausam** and "Meghdoot" android application on mobile for Weather forecast and weather based Agromet Advisories and "Damini" android application for forecast of Thunderstorm and lightening.

Mausam MobileApp link: <https://play.google.com/store/apps/details/>

Meghdoot MobileApp link: <https://play.google.com/store/apps/details/>

Damini MobileApp link : <https://play.google.com/store/apps/details/>